कानपुर बनाएगा डोर्नियर एयरक्राफ्ट का 12.7 एमएम गन सिस्टम

■ सुहेल खान

कानपुर। हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) कानपुर में बना डोर्नियर एयरक्राफ्ट अब दुश्मनों पर गोलियां भी बरसाएगा। इस वजह से इसका प्रयोग छोटे युद्ध ऑपरेशनों में भी हो सकेगा। एचएएल की ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट डिवीजन में बने इस एयरक्राफ्ट की मदद से भारतीय तटरक्षक बल अभी समुद्री सीमाओं पर निगरानी करता है, लेकिन इसमें गन सिस्टम नहीं था। इसमें 12.7 एमएम क्षमता का गन सिस्टम लगाने के लिए एचएएल ने त्रिपक्षीय करार किया है। एचएएल के साथ ऑर्डिनेंस फैक्ट्रियों की कानपुर स्थित डीपीएसयू कंपनी एडब्ल्यूईआईएल और डीआरडीओ के साथ एमओयू साइन हुआ है। पहले चरण में इंडियन कोस्टगार्ड के डोर्नियर एयरक्राफ्ट गन सिस्टम से लैस होंगे। एचएएल कानपुर से दो डोर्नियर-228 के गुयाना पहुंचने के बाद दुनिया में आत्मनिर्भर भारत मिशन को मजबूती मिली है। अब एचएएल इसमें और भी सुविधाएं बढ़ा रहा है।

■ एचएएल के कानपुर डिवीजन के साथ ऑर्डिनेंस फैक्ट्री का हुआ समझौता
■ एडब्ल्यूईआईएल, एचएएल और एडीआरडीई के बीच एमओयू पर हुए हस्ताक्षर

डोर्नियर में होंगी कई विशेषताएं

1. एसएआर (सिंथेटिक अपर्चर रडार) से बादलों के पार भी साफ तस्वीरें मिलेंगी।
2. जमीन और समुद्र की हलचलों की जानकारी पायलट को पता चल सकेगी।
3. इलेक्ट्रॉनिक इंटेलिजेंस से लैस डोर्नियर विमानों को मिलेगी खुफिया जानकारी।
4. समुद्री खतरों की निगरानी और उनके खदेड़ने से सुरक्षित रहेगी समुद्री सीमा।

एक नजर में डोर्नियर एयरक्राफ्ट

- 54.4 फीट लंबे डॉर्नियर-228 को दो पायलट उड़ाते हैं।
- 19 लोगों को बैठाकर लगातार 10 घंटे उड़ान में दक्ष।
- 413 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ान भरता है विमान।
- 792 मीटर रनवे से उड़ान, 451 मीटर रनवे पर उतरने में सक्षम।

> आईसीजी डोर्नियर एयरक्राफ्ट में 12.7 गन सिस्टम लगाने के लिए डीपीएसयू का एचएएल और एआरडीई के साथ करार हुआ है। एआरडीई की मदद से गन सिस्टम ऑर्डिनेंस फैक्ट्री तिरुचिरापल्ली में विकसित होगा।
> -एके मौर्या, सीएमडी, एडब्ल्यूईआईएल

घुसपैठियों को चिन्हित करने के साथ खदेड़ेगा : एडब्ल्यूईआईएल की रक्षा उत्पादन इकाई ऑर्डिनेंस फैक्ट्री तिरुचिरापल्ली (ओएफटी) इन विमानों के लिए 12.7 एमएम की बैरल वाला गन सिस्टम विकसित करेगी। जबकि कानपुर एचएएल के ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट डिवीजन (टीएडी) में इसे इंस्टॉल किया जाएगा। भारतीय तटरक्षक के लिए डोर्नियर एयरक्राफ्ट में एचएएल ने रडार सिस्टम समेत कई सुविधाएं विकसित की हैं, लेकिन इससे शत्रुओं पर हमला करने के लिए कोई हथियार नहीं लगा था। अब हल्के ऑपरेशन में समुद्री सीमाओं के घुसपैठियों से निपटने के लिए डोर्नियर एयरक्राफ्ट ही पर्याप्त होगा। आधुनिक सुविधाओं से लैस डोर्नियर घुसपैठियों को चिन्हित कर उन्हें खदेड़ भी देगा।

डीआरडीओ की विंग एआरडीई बनाएगी डिजाइन : डोर्नियर एयरक्राफ्ट में 12.7 एमएम का गन सिस्टम लगाने में डीआरडीओ की अहम भूमिका होगी। डीआरडीओ की पुणे स्थित आयुध अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान की डिजाइन पर गन सिस्टम विकसित होगा। तीनों संस्थानों के बीच बेंगलुरु में एमओयू साइन हो चुका है। एमओयू पर हस्ताक्षर करने के दौरान एचएएल टीएडी कानपुर के अफसरों के साथ कानपुर में एडब्ल्यूईआईएल मुख्यालय के सीएमडी एके मौर्या भी मौजूद रहे।